

ॐ
प्रार प्रारि ॐ
ॐ

211
Prava Prati-
stha vidhi

व३
 लंकीजं क्षाय ॥ १ ॥ ज्ञान्वादिना सि पर्यन्तः आपस्कापनी धन्वाः
 कार्त्तवर्षा विष्णुदेवर्गः तन्मधः त्वंवीजं क्षाय ॥ २ ॥ नास्या
 दिक्षदिपर्यन्तः गजस्कापनी त्रिकानो कार्त्तः त्रकांशुः रुद्रदेवर्गः तन्म
 धः त्वंवीजं क्षाय ॥ ३ ॥ द्वादिकलपपर्यन्तः वायस्कापनी षड्कोत्त
 कार्त्तः कृष्णवर्षा सहस्रधनदेवर्गः तन्मधः त्वंवीजं क्षाय ॥ ४ ॥ कल
 दितलाट पर्यन्तः आकाशस्कापनी सदाशिवदेवर्गः धूम्रवर्षा वर्षा

[illegible][illegible]

आशा आर्वाइव्स
2/58 I
ASHA ARCHIVES

किं कौं कीलकं पानपतिष्ठासिध्दर्थरूपविनिधागः॥ ॥ यथा
देवस्य मूलमर्कः॥ पानपतिष्ठा मूलमर्कच॥ यथाऽर्कः कृत्वा॥
१०८॥ ५४॥ २१॥ १०॥ वा३॥ ॥ ॐ निपात्यपतिष्ठा॥ ॥ देवस्य मू
लनादुक्ति॥ १०८॥ स्ववेदः ४ पुतिष्ठा॥ ॥ कौं॥ नकाधिधामानूत
यन्मसीहो पाठं क॥ विदुः नाथवात्मनः॥ मूलं कपालं दधर्माकि

नाथेन कौंतिनपीयनमामिदवी॥ ॥ म० ०० म० दूति॥ ॥ कौं॥ ददः
यायस्वाहा॥ ॐ यज्ञायना॥ दूति॥ ॥ ॐ कौंतिनस२॥ ॐ सहस्रं
नीर्षी॥ ॐ ॥ ॥ ॐ कौंतिस्वाये२॥ ॐ अ० ४० स० ४० पृथिवी नः
सा च विष्णु कर्मणः ४० समवर्तना॥ या नमस्तु विदधदूयमति नमस्तु
यदेवस्वमागानमः॥
जिस्वा॥ ॥ ॐ कौंतिवचाय२॥ ॐ आ० ४० ४० मना॥ कवच॥ ॥ ॐ॥
॥ कौंतिप्रयाय२॥ ॐ विशाद॥ नय॥ ॥ ॐ कौंतिस्वाय२॥ ॐ नमस्तु

डा॥ अस्तु ॥ ॥ मूनना कृति ॥ १०॥ पू० ॥ ॐ पू० कृ० न स्या ॥ नमः ॥
 नमः ॥ ॥ मूननेव ॥ जीव याचयत् दव ॥ ॐ शालं दहि नथा जीवः
 आयुर्दहि सूर्य धनं ॥ विद्या हानं सूर्य दहि दहि मत्तय सायनं ॥
 ॥ ॐ शालं प्रणिष्ठा विधि ॥ ॥ नमः ॥ श्री कृ० नली विधि वत् ॥ ॥
 पञ्च दवता नूतन पल यथा विधि पूजयेत् ॥ ॥ ॐ ॥
 शालं दहि नथा जीव आयुर्दहि सूर्य धनं ॥ विद्या हानं सूर्य दहि दहि मत्तय सायनं

॥ जीवति शन ॥

अथ शालं प्रणिष्ठा मन्त्र सवका विष्णु महोदय नमः ॥ गायत्री कन्द ॥ अमक देवता या जीवपु
 गिष्ठा रुदयवीर्ग स्वाहा ॥ ॐ श्री कृ० नली विधि ॥ ॥ ॐ श्री कृ० नली विधि ॥ ॥ ॐ श्री कृ० नली विधि ॥
 अमक देवता या प्रासह्य प्रालम् ॥ ॐ श्री ० अमक देवता या ॐ श्री ० अमक देवता या ॐ श्री ० अमक
 क देवता या सर्व दिव्यानि ॐ श्री ० अमक देवता या ॐ श्री ० अमक देवता या ॐ श्री ० अमक देवता या
 नि ॐ श्री ० अमक देवता या वाक्वालि पाठ पायुष स्तुति ॐ श्री ० अमक देवता या
 नाया हा दृष्टी नूतन मगन्धानि अमक देवता या सूर्य विनी गिष्ठा ॐ श्री ०
 अमक देवता या हे सः ॥ हे स्वाहा ॥ ॥